भारतेंदु हरिश्चंद्र

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» भारतेंदु हरिश्चंद्र का परिचय और व्यक्तित्व

प्रश्न 1 (आसान). भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म कहाँ हुआ था?
उत्तर – काशी (वाराणसी)

प्रश्न 2 (आसान). भारतेंदु जी के व्यक्तित्व की दो मुख्य विशेषताएँ क्या थीं?
उत्तर – देश-प्रेम और क्रांति-चेतना

प्रश्न 3 (मध्यम). भारतेंदु हरिश्चंद्र को 'आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि उन्होंने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी, विभिन्न विधाओं में रचना की और लोगों में आधुनिक चेतना जगाई।

प्रश्न 4 (कठिन). भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने देश की दुर्दशा का त्रासद अनुभव 'किशोर वय' में ही कर लिया था। इस कथन का क्या आशय है?
उत्तर – इसका आशय यह है कि बहुत कम उम्र में ही, जब वे युवा थे, उन्होंने अंग्रेजों की गुलामी और देश की खराब हालत को महसूस कर लिया था और उन्हें इसका बहुत दुख हुआ था।

» भारतेंदु का साहित्यिक योगदान

प्रश्न 5 (आसान). भारतेंदु हरिश्चंद्र की स्त्री-शिक्षा के लिए प्रकाशित पत्रिका का क्या नाम था?
उत्तर – बाला बोधिनी

प्रश्न 6 (आसान). भारतेंदु का एक प्रसिद्ध मौलिक नाटक कौन सा है जिसमें समाज की अंधेरगर्दी पर व्यंग्य किया गया है?
उत्तर – अंधेर नगरी

प्रश्न 7 (मध्यम). भारतेंदु जी ने अपनी पत्रिकाओं और नाटकों के माध्यम से समाज में क्या बदलाव लाने की कोशिश की?
उत्तर – उन्होंने लोगों में देशप्रेम की भावना जगाई, समाज की कुरीतियों पर प्रहार किया, और हिंदी गद्य को नई दिशा दी।

प्रश्न 8 (कठिन). भारतेंदु के साहित्यिक योगदान में मौलिक और अनुवादित रचनाओं का क्या महत्व है? किन्हीं दो-दो उदाहरणों सहित समझाइए।
उत्तर – मौलिक रचनाओं (जैसे 'भारत दुर्दशा', 'अंधेर नगरी') से उन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज की स्थिति, कुरीतियों और राजनीतिक समस्याओं को सीधे लोगों के सामने रखा। अनुवादित रचनाओं (जैसे 'धनंजय विजय', 'विद्या सुंदर') से उन्होंने अन्य भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य को हिंदी पाठकों तक पहुंचाया, जिससे हिंदी साहित्य की समृद्धि बढ़ी और नए विषयों तथा शैलियों का प्रवेश हुआ।

» हिंदी गद्य और नाटक के विकास में भारतेंदु की भूमिका

प्रश्न 9 (आसान). भारतेंदु से पहले हिंदी भाषा का स्वरूप कैसा था?
उत्तर – भारतेंदु से पहले हिंदी ज़्यादातर ब्रजभाषा और काव्य के रूप में थी।

प्रश्न 10 (आसान). 'हिंदी नई चाल में ढली' का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि हिंदी ने काव्य के बजाय खड़ी बोली गद्य का नया रास्ता अपनाया।

प्रश्न 11 (मध्यम). भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी नाटक और निबंध परंपरा का जनक क्यों कहा जाता है?
उत्तर – उन्हें जनक इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने ही सबसे पहले मौलिक नाटक और निबंध लिखकर इन विधाओं को हिंदी साहित्य में स्थापित किया और आगे बढ़ने का रास्ता दिखाया।

प्रश्न 12 (कठिन). भारतेंदु के योगदान ने उनके समकालीन और बाद के लेखकों को कैसे प्रभावित किया?
उत्तर – उनके योगदान ने समकालीन लेखकों को खड़ी बोली में लिखने के लिए प्रेरित किया और उन्हें एक नेता के रूप में मार्गदर्शन दिया। बाद के लेखकों के लिए उन्होंने एक 'पथ-प्रदर्शक' का कार्य किया, जिससे आधुनिक हिंदी गद्य की नींव पड़ी।

» 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' भाषण का परिचय

प्रश्न 13 (आसान). भारतेंदु जी ने अपने भाषण में किस पर व्यंग्य किया है?
उत्तर – ब्रिटिश शासन की मनमानी पर।

प्रश्न 14 (आसान). भारतेंदु जी ने किस देश की उन्नति की बात की है?
उत्तर – भारतवर्ष की।

प्रश्न 15 (मध्यम). भारतेंदु जी के अनुसार 'श्रम की महत्ता' का क्या अर्थ है?
उत्तर – काम या मेहनत के महत्व को समझना और उसे अपनाना।

प्रश्न 16 (कठिन). इस भाषण में ब्रिटिश शासन के प्रति व्यंग्य और आदर दोनों एक साथ कैसे दिखते हैं?
उत्तर – उन्होंने ब्रिटिश शासन की मनमानी पर व्यंग्य किया, लेकिन अंग्रेजों के परिश्रमी स्वभाव के प्रति आदर भी व्यक्त किया।

» भारतीयों की निष्क्रियता और आलस्य पर व्यंग्य

प्रश्न 17 (आसान). भारतेंदु जी ने भारतीयों की तुलना 'कुएँ के मेंढक' से क्यों की है?
उत्तर – क्योंकि भारतीय कुएँ के मेंढक की तरह अपनी छोटी दुनिया में सिमटे हुए हैं और बाहरी दुनिया की उन्नति से अनजान हैं।

प्रश्न 18 (आसान). भारतेंदु जी के अनुसार, भारतीयों को कौन उनका बल याद दिलाए?
उत्तर – उनके अनुसार, हिंदुस्तानी राजे-महाराजे, नवाब, रईस या हाकिम ही उन्हें उनका बल याद दिला सकते हैं।

प्रश्न 19 (मध्यम). भारतेंदु जी के समय में भारतीय राजे-महाराजे और हाकिम क्यों भारतीयों की मदद नहीं कर पा रहे थे?
उत्तर – राजे-महाराजे अपनी पूजा, भोजन और झूठी गपशप में व्यस्त थे, जबकि हाकिम सरकारी काम और मनोरंजन (बॉल, घुड़दौड़, थिएटर) में अपना समय बिताते थे, इसलिए उन्हें भारतीयों की उन्नति की कोई फिक्र नहीं थी।

प्रश्न 20 (कठिन). भारतेंदु जी ने 'उन्नति की घुड़दौड़' मुहावरे का प्रयोग किस संदर्भ में किया है? इसका भारतीयों पर क्या प्रभाव पड़ रहा था?
उत्तर – उन्होंने इस मुहावरे का प्रयोग यह दिखाने के लिए किया कि पूरी दुनिया (अमेरिकन, अंग्रेज, फ्रांसीसी आदि) उन्नति की दौड़ में तेजी से आगे बढ़ रही है, लेकिन भारतीय (हिंदू काठियावाड़ी) निष्क्रिय खड़े होकर समय बर्बाद कर रहे हैं। इससे वे बहुत पीछे छूट रहे थे और भविष्य में आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता।

» उन्नति के लिए आवश्यक उपाय

प्रश्न 21 (आसान). भारतेंदु जी के अनुसार 'श्रम की महत्ता' का क्या अर्थ है?
उत्तर – मेहनत करना और 'नौकरी' के बजाय 'स्वरोजगार' को महत्व देना।

प्रश्न 22 (आसान). किस भावना के साथ देश के लिए काम करना चाहिए?
उत्तर – 'त्याग भावना' और 'आत्मबल' के साथ।

प्रश्न 23 (मध्यम). भारतेंदु जी ने किन 'विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति' करने की बात कही है? किन्हीं तीन का उल्लेख करें।
उत्तर – उन्होंने 'धर्म, घर के काम, रोजगार, शिष्टाचार, चाल-चलन, शरीर के बल, मन के बल, समाज' जैसे कई क्षेत्रों में 'उन्नति' करने की बात कही है।

प्रश्न 24 (कठिन). 'तुम्हारे इस पथ के कंटक' से भारतेंदु जी का क्या आशय है? दो उदाहरणों से समझाएं।
उत्तर – 'तुम्हारे इस पथ के कंटक' से उनका आशय उन 'रुकावटों' और 'कुरीतियों' से है जो देश की 'उन्नति' के रास्ते में आती हैं। उदाहरण के लिए, 'बाल विवाह' और 'समुद्र यात्रा को धर्म विरुद्ध मानना' या 'परदेशी वस्तुओं पर अत्यधिक निर्भरता'।

» वास्तविक धर्म और समाज-सुधार

प्रश्न 25 (आसान). भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किस प्रथा को 'अधर्म' माना था जहाँ एक पुरुष कई पत्नियाँ रखता था?
उत्तर – बहु-विवाह

प्रश्न 26 (आसान). वे समाज के किस वर्ग को दोबारा जीवन शुरू करने का अधिकार देने के पक्ष में थे?
उत्तर – विधवाएँ

प्रश्न 27 (मध्यम). भारतेंदु के अनुसार 'वास्तविक धर्म' का क्या अर्थ था? क्या यह केवल पूजा-पाठ तक सीमित था?
उत्तर – भारतेंदु के अनुसार वास्तविक धर्म केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं था। इसका अर्थ था अच्छे कर्म करना, समाज की भलाई करना, और समाज में फैली कुरीतियों को दूर करना।

प्रश्न 28 (कठिन). 'कुलीन प्रथा' और 'जहाज का सफर निषेध' जैसी कुरीतियों का देश की उन्नति पर क्या प्रभाव पड़ता था, जैसा कि भारतेंदु जी ने समझाया?
उत्तर – कुलीन प्रथा समाज में भेदभाव बढ़ाती थी और लोगों को उनकी योग्यता के बजाय कुल या जाति के आधार पर आंकती थी, जिससे समाज में एकता नहीं बन पाती थी। 'जहाज का सफर निषेध' हमें अन्य देशों से सीखने और व्यापार करने से रोकता था, जिससे देश आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से पिछड़ जाता था। भारतेंदु जी के अनुसार, ये दोनों कुरीतियाँ देश की समग्र उन्नति में बाधा थीं।

» आपसी प्रेम और एकता का महत्व

प्रश्न 29 (आसान). भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार, हमें किन लोगों से वैर छोड़ना चाहिए?
उत्तर – भारतेंदु जी के अनुसार, हमें वैष्णव, शाक्त इत्यादि अलग-अलग मतों को मानने वाले लोगों से वैर छोड़ना चाहिए।

प्रश्न 30 (आसान). लेखक ने किन-किन धर्मों के लोगों को आपस में मिलने के लिए कहा है?
उत्तर – लेखक ने हिन्दू, जैन, मुसलमान सभी धर्मों के लोगों को आपस में मिलने के लिए कहा है।

प्रश्न 31 (मध्यम). भारतेंदु हरिश्चंद्र ने छोटी जाति के लोगों के प्रति कैसा व्यवहार करने को कहा है?
उत्तर – भारतेंदु हरिश्चंद्र ने छोटी जाति के लोगों का आदर करने और उनका तिरस्कार करके उनका मन न तोड़ने को कहा है।

प्रश्न 32 (कठिन). भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग किस व्यापक अर्थ में किया है?
उत्तर – भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग केवल धर्म विशेष के लिए नहीं, बल्कि भारत में रहने वाले हर नागरिक के लिए किया है, चाहे वह किसी भी रंग, जाति या धर्म का हो, वह सब 'हिन्दू' (भारतीय) हैं।

» स्वदेशी और अपनी भाषा में उन्नति

प्रश्न 33 (आसान). स्वदेशी का क्या अर्थ है?
उत्तर – अपने देश में बनी वस्तुओं का प्रयोग करना।

प्रश्न 34 (आसान). भारतेंदु हरिश्चंद्र किस पर निर्भरता छोड़ने की बात करते हैं?
उत्तर – विदेशी वस्तुओं और विदेशी भाषा पर।

प्रश्न 35 (मध्यम). भारतेंदु के अनुसार, अपनी भाषा में उन्नति क्यों ज़रूरी है?
उत्तर – अपनी भाषा में उन्नति करने से हमारी संस्कृति और पहचान बनी रहती है, और शिक्षा का प्रसार भी आसानी से होता है, जिससे देश आर्थिक रूप से मज़बूत होता है।

प्रश्न 36 (कठिन). स्वदेशी और अपनी भाषा में उन्नति, ये दोनों देश की आर्थिक स्थिति को कैसे सुधारते हैं?
उत्तर – जब हम स्वदेशी वस्तुएं खरीदते हैं, तो पैसा देश के अंदर ही रहता है और स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। अपनी भाषा में शिक्षा और व्यापार करने से बाहरी निर्भरता कम होती है, ज्ञान का प्रसार होता है, और नए विचार विकसित होते हैं, जिससे देश की आर्थिक स्थिति मज़बूत होती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. भारतेंदु हरिश्चंद्र को 'पुनर्जागरण का नायक' क्यों कहा जाता है? समझाइए।

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'पुनर्जागरण' का अर्थ क्या है। पुनर्जागरण का मतलब है किसी सोई हुई चेतना को फिर से जगाना, नए विचार और आधुनिकता लाना।

› दूसरा कदम: भारतेंदु जी ने अपनी लेखनी और कार्यों से लोगों में देश-प्रेम, अपनी भाषा के प्रति गौरव और समाज सुधार की भावना जगाई। उन्होंने लोगों को अंधविश्वासों और पुरानी रूढ़ियों से बाहर आने को कहा।

› तीसरा कदम: उन्होंने सिर्फ लेख नहीं लिखे, बल्कि 'तदीय समाज' जैसी संस्थाएं बनाईं, पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं ताकि अधिक से अधिक लोगों तक उनके विचार पहुँचें और वे जागरूक हों।

› चौथा कदम: इस तरह उन्होंने हिंदी भाषी क्षेत्र में आधुनिक विचारों और नई चेतना का संचार किया, जिससे लोग जागरूक हुए और आगे बढ़े। इसलिए उन्हें 'पुनर्जागरण का नायक' कहा जाता है।

उत्तर – भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी लेखनी, संस्थाओं और पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी समाज में नई चेतना, आधुनिकता और देश-प्रेम की भावना जगाई, लोगों को रूढ़ियों से मुक्त होने और अपनी संस्कृति पर गर्व करने के लिए प्रेरित किया। इसी कारण उन्हें 'पुनर्जागरण का नायक' कहा जाता है।

उदाहरण 2. प्रश्न: भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा प्रकाशित किन्हीं दो पत्रिकाओं और दो मौलिक नाटकों के नाम लिखिए।

› पहला कदम: पत्रिकाओं के नाम याद कीजिए। हमने कौन-कौन सी पत्रिकाएँ पढ़ी थीं? कविवचनसुधा, हरिश्चंद्र मैगज़ीन और बाला बोधिनी। इनमें से कोई भी दो नाम लिख सकते हैं।

› दूसरा कदम: मौलिक नाटकों के नाम याद कीजिए। मौलिक यानी उनके अपने लिखे हुए। हमने पढ़े थे - भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, नील देवी। इनमें से कोई भी दो नाम लिखिए।

उत्तर – उत्तर:
पत्रिकाएँ: कविवचनसुधा, हरिश्चंद्र मैगज़ीन (या बाला बोधिनी)
मौलिक नाटक: भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी (या नील देवी)

उदाहरण 3. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी गद्य के विकास में क्या महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

› पहला कदम है ये समझना कि भारतेंदु से पहले हिंदी गद्य कैसा था। ज़्यादातर ब्रजभाषा में काव्य रूप में था, आम बोलचाल की भाषा नहीं थी।

› दूसरा कदम, भारतेंदु जी ने अपनी पत्रिकाओं ('कविवचनसुधा', 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन') और नाटकों-निबंधों में खड़ी बोली हिंदी का खुलकर प्रयोग किया।

› तीसरा कदम, उनके इस प्रयोग से 'हिंदी नई चाल में ढली' – यानी खड़ी बोली हिंदी को एक पहचान मिली, वह आम लेखन और बोलचाल की भाषा बन गई। उन्होंने हिंदी नाटक और निबंध की परंपरा शुरू की।

› निष्कर्ष है कि उन्होंने हिंदी गद्य को एक आधुनिक स्वरूप दिया, उसे जनसामान्य के करीब लाए और उसे 'The language of prose and drama' बनाया।

उत्तर – भारतेंदु हरिश्चंद्र ने खड़ी बोली हिंदी को अपनी पत्रिकाओं, नाटकों और निबंधों के माध्यम से जनसामान्य की लेखन और बोलचाल की भाषा बनाकर 'हिंदी नई चाल में ढली' को चरितार्थ किया। उन्होंने हिंदी गद्य और नाटक की परंपरा के

जनक के रूप में एक मौलिक भूमिका निभाई, जिससे हिंदी साहित्य को एक नई दिशा मिली।

उदाहरण 4. भारतेंदु हरिश्चंद्र के भाषण 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' में उन्होंने भारतीयों की किन कमियों पर प्रहार किया है?

› पहला, भाषण के शीर्षक पर ध्यान दें: 'उन्नति कैसे हो सकती है?'. इससे पता चलता है कि वह सुधार की बात कर रहे हैं।

› दूसरा, याद करें कि भारतेंदु जी अपने समय के समाज को बहुत बारीकी से देखते थे।

› तीसरा, भाषण के परिचय में स्पष्ट रूप से 'आलसीपन', 'समय के अपव्यय' और 'भारतीय समाज की रूढ़ियों और गलत जीवन शैली' का ज़िक्र है।

› इन तीनों मुख्य बिंदुओं को एक साथ रखें।

› उत्तर में इन तीनों कमियों का उल्लेख करें।

उत्तर – भारतेंदु जी ने भारतीयों के आलसीपन, समय के अपव्यय (बर्बादी) और भारतीय समाज की रूढ़ियों व गलत जीवन शैली पर प्रहार किया है।

उदाहरण 5. भारतेंदु जी ने भारतीयों को 'रेल की गाड़ी' जैसा क्यों कहा है?

› भारतेंदु जी का मानना था कि भारतीय लोग क्षमतावान तो हैं।

› लेकिन वे खुद से कोई पहल नहीं करते, जैसे रेल के डिब्बे इंजन के बिना नहीं चलते।

› उन्हें किसी बाहरी शक्ति या प्रेरणा की आवश्यकता होती है, जो उन्हें आगे बढ़ा सके।

उत्तर – भारतेंदु जी ने भारतीयों को 'रेल की गाड़ी' इसलिए कहा क्योंकि भारतीयों में योग्यता तो है, पर वे बिना किसी प्रेरणा या चलाने वाले के निष्क्रिय पड़े रहते हैं, जैसे रेल के डिब्बे बिना इंजन के नहीं चल सकते।

उदाहरण 6. भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार, 'उन्नति के लिए किन दो मुख्य कुरीतियों' को छोड़ना आवश्यक है?

› पाठ में भारतेंदु जी ने कई 'बातों' को 'पथ के कंटक' बताया है, जिन्हें छोड़ना ज़रूरी है।

› वे 'लड़कों को छोटेपन ही में ब्याह करके उनका बल, वीर्य, आयुष्य सब घटाने' को गलत बताते हैं और इसे 'कुलीन-प्रथा, बहु-विवाह' जैसी कुरीतियों में शामिल करते हैं।

› वे 'परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा' छोड़ने को कहते हैं और 'अपने देश में अपनी भाषा में उन्नति' करने पर जोर देते हैं।

› इसी प्रकार, 'जाति-पाँति' के झगड़े और 'आपसी वैर' को भी 'त्याज्य' बताते हैं।

› वह 'धर्म के नाम पर फैली रूढ़ियों' और 'अज्ञानता' को भी उन्नति में बाधक मानते हैं।

उत्तर – भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार, 'बाल विवाह' और 'कुलीन प्रथा, बहु-विवाह' जैसी कुरीतियों को छोड़ना आवश्यक है। साथ ही, 'परदेशी वस्तुओं और भाषाओं पर निर्भरता' और 'आपसी मतभेद' भी छोड़ना ज़रूरी है।

उदाहरण 7. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने समाज में व्याप्त किन तीन कुरीतियों की आलोचना की थी और क्यों?

› सबसे पहले, 'बाल विवाह' की आलोचना की। उन्होंने कहा कि बच्चों की शादी करने से उनके बचपन और भविष्य पर गलत असर पड़ता है।

› दूसरा, 'बहु-विवाह' की आलोचना की। उनका मानना था कि एक व्यक्ति का कई शादियाँ करना महिलाओं के प्रति अन्याय है और इससे परिवार में कलह बढ़ती है।

› तीसरा, 'जहाज का सफर निषेध' जैसी सोच की आलोचना की। उन्होंने तर्क दिया कि समुद्री यात्राओं पर रोक लगाने से हम दुनिया से कट जाते हैं और ज्ञान तथा व्यापार के नए अवसर खो देते हैं।

उत्तर – भारतेंदु जी ने 'बाल विवाह', 'बहु-विवाह' और 'जहाज का सफर निषेध' जैसी कुरीतियों की आलोचना की, क्योंकि ये समाज को प्रगति करने से रोकती थीं और मानवता के सिद्धांतों के खिलाफ थीं।

उदाहरण 8. भारतेंदु जी ने आपसी प्रेम और एकता का महत्व समझाने के लिए कौन सा घरेलू उदाहरण दिया है?

› पहले प्रश्न को ध्यान से पढ़ें और सोचें कि यह किस विषय से संबंधित है।

› याद करें कि भारतेंदु जी ने एकता समझाने के लिए परिवार के भीतर के किसी प्रसंग का जिक्र किया था।

› उनके शब्दों को याद करें: 'घर में आग लगे, तब जिठानी - देवरानी को आपस का डाह छोड़कर एक साथ वह आग बुझानी चाहिए।'

› इस उदाहरण का अर्थ समझें कि कैसे संकट के समय आपसी मनमुटाव भुलाकर एक साथ काम करना चाहिए।

उत्तर – भारतेंदु जी ने आपसी प्रेम और एकता का महत्व समझाने के लिए 'घर में आग लगने पर जिठानी-देवरानी का आपस का वैर छोड़कर मिलकर आग बुझाना' का उदाहरण दिया है।

उदाहरण 9. भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार, देश की आर्थिक उन्नति के लिए हमें क्या करना चाहिए?

› पहला कदम: हमें विदेशी वस्तुओं पर अपनी निर्भरता कम करनी चाहिए, यानी 'विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार' करना चाहिए।

› दूसरा कदम: हमें अपनी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग और प्रसार करना चाहिए, 'अपनी भाषा में उन्नति' करनी चाहिए।

› तीसरा कदम: हमें अपने देश की 'अपनी कारीगरी और उद्योग धंधों' को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि हमारे देश के लोगों को काम मिले।

उत्तर – भारतेंदु हरिश्चंद्र के अनुसार, देश की आर्थिक उन्नति के लिए हमें विदेशी वस्तुओं और भाषा पर निर्भरता छोड़कर, अपनी देश की वस्तुओं, अपनी भाषा और अपनी कारीगरी को बढ़ावा देना चाहिए।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• भारतेंदु हरिश्चंद्र के व्यक्तित्व और पुनर्जागरण के नायक के रूप में उनकी भूमिका पर सीधे प्रश्न आ सकते हैं। उनके कार्यों और विशेषताओं को याद रखना महत्वपूर्ण है।

• भारतेंदु जी की पत्रिकाओं और मौलिक नाटकों के नाम अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में पूछे जाते हैं। नाम याद करते समय उनकी विशिष्टताओं (जैसे स्त्री-शिक्षा के लिए कौन सी थी) पर ध्यान देना।

• यह प्रश्न 'हिंदी साहित्य में भारतेंदु की भूमिका' के रूप में बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। 'हिंदी नई चाल में ढली' वाक्य का प्रयोग कर उत्तर लिखें।

• यह भाषण बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें भारतेंदु जी के समाज सुधार के विचारों को अच्छे से समझ कर जाना, खासकर उनकी आलस्य और रूढ़ियों पर की गई टिप्पणियाँ।

• इस भाग से 'रेल की गाड़ी' और 'कुएँ के मेंढक' वाले उदाहरणों की व्याख्या, और भारतेंदु जी द्वारा आलस्य पर किए गए व्यंग्य पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। इन्हें अच्छे से समझना।

• भारतेंदु जी के इस भाषण से अक्सर 'देश की उन्नति के लिए लेखक द्वारा बताए गए उपाय' पर प्रश्न आते हैं, जिसमें आपसी प्रेम और एकता वाला बिंदु बहुत महत्वपूर्ण है। इसे उदाहरण के साथ तैयार करें।

• यह विषय 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?' निबंध के मुख्य बिंदुओं में से एक है। परीक्षा में इससे जुड़े प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, खासकर भारतेंदु हरिश्चंद्र के विचारों पर आधारित।

एक नज़र में रिवीज़न

› भारतेंदु हरिश्चंद्र: काशी में जन्म, देश-प्रेमी, पुनर्जागरण नायक, आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक।

› भारतेंदु: पत्र-पत्रिकाएं (कविवचनसुधा, बाला बोधिनी), मौलिक नाटक (भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी), अनुवाद (विद्या सुंदर)।

› भारतेंदु: हिंदी गद्य, नाटक, निबंध के जनक; खड़ी बोली को नई 'चाल' दी।

› भारतेंदु का भाषण: ब्रिटिश व्यंग्य, भारतीय कमियाँ दूर करने का आह्वान।

› भारतीयों की निष्क्रियता, आलस्य; रेलगाड़ी और कुएँ के मेंढक से तुलना।
› मत-मतांतर छोड़ो, जातिभेद त्याग कर आपसी प्रेम-एकता से देश की उन्नति करो।
› विदेशी चीज़ें-भाषा छोड़ो; स्वदेशी अपनाओ, अपनी भाषा, अपनी कारीगरी बढ़ाओ।